सरसों की संस्तुत किस्में और बिजाई का समय–

किस्में	बिजाई का समय	औसत पैदावार कुन्तल (प्रति हैक्टेयर)	पकने का दिन	तेल (प्रतिशत)
पूसा बोल्ड	अक्टूबर माह का दूसरा पखवारा	18	145	42
आर एस पी आर 01		19–20	140–150	40
आर एस पी आर 03		15–19	145	40
क्रांती	अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से नवम्बर का का अंतिम सप्ताह	15–18	125–130	40
पूसा बहार		10	108–110	43
पूसा बसन्त		11	108	42
आर एल 1359		19–21	147	43
आर एच 30		16–20	130–135	39
वरूणा		20–22	135–140	43
एन आर सी डी आर 2	नवम्बर का प्रथम सप्ताह	16.69	141	40.2

बीज दर– 5.0 किग्रा प्रति हेक्टेयर के दर से बुवाई करनी चाहिए।

बुवाई की विधि – बीज को कतारों में 30 सेमी एवं पौध से पौध की दूरी 10–15 सेमी तथा बीज की गहराई 3–4 सेमी रखनी चाहिए

निराई–गुड़ाई तथा खरपतवार नियन्त्रण

बुवाई के तीस दिन बाद खरपतवार नियन्त्रण तथा नमी संरक्षण के लिए एक गुड़ाई अति आवश्यक है खरपतवार नियंत्रण के लिए फ्लूक्लोरालिन 0.75 किग्रा सक्रिय तत्व/हेक्टेयर की दर से बुवाई से पहले भूमि में मिलाएं या पेंडीमेथिलीन 1 किग्रा सक्रिय तत्व या आइसोप्रोट्युरान की 1 किग्रा सक्रिय तत्व को 500–600 लीटर पानी में घोल बनाकर बीज के जमाव से पहले छिड़काव करें ।

उर्वरकों की आवश्यकता– उर्वरकों का प्रयोग निम्नलिखित है

पोशक तत्व (किग्रा/हेक्टेयर)

नत्रजन	फास्फोरस	पोटाष	गंधक
60	30	15	20

उर्वरक (किग्रा/हेक्टेयर)

युरिया	डी ए पी	म्युरेट आफ पोटाष	जिप्सम
105	65	25	101

कीट एवं उसका प्रबंधन

क्रं.स.	कीट एवं लक्षण	प्रबन्धक
1	**सरसों का मांहू**– यह हरे रंग का कीट है जो पूरे पुश्पक्रम एवं फलियों को अधिक संख्या के कारण ढके रहकर उनसे रस चूसते है फलस्वरुप पौधे बौने रह जाते है तथा फलियों के सिकुड़ जाने से दाने नही बनते हैं।	**यांत्रिक नियंत्रण** 1. अक्टूबर के प्रथम पखवारे में अगेती बुवाई करें। 2. उर्वरकों की संस्तुत मात्रा ही प्रयोग करें। **जैव नियंत्रण** 1. जैव नियंत्रण के कारकों का संरक्षण करें जैसे पैरासिटाइड, लेडी बर्ड बीटल, सिरफिड लारवी तथा क्राइसोपा यदि पेस्ट डिफेंडर अनुपात 2:1 हो तो कीटनाषी रसायनों के प्रयोग से बचें। **रासायनिक नियंत्रण** 1. क्लोरोपाइरीफास + एसिटामीप्रिड के मिश्रण की 0.05 प्रतिशत मात्रा का प्रयोग माहू के लिए अधिक प्रभावषाली है। 2. क्लोरोपाइरीफास 20ई सी (0.025 प्रतिषत) या मिथाइल ओ डिमैटान 25 ई सी (0.03 प्रतिषत)की 900 मी ली प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें। 3. लाभकारी नियंत्रण के लिए कार्बोफ्युरान 3जी की 20किग्रा/हे की दर से फूल बनना प्रारम्भ होने पर या माहू की पहली कालोनी दिखने पर छिड़काव करने के उपरान्त हल्की सिंचाई करें। कीटनाषी का प्रयोग तब करें जब आर्थिक क्षति स्तर 40–45 प्रतिशत या पौधे पर 50–60 मांहू, 10 से.मी. मुख्य तने पर दिखें।
2	सरसों की आरा मक्खी–इसकी इल्ली नयी फसल की पत्तियों को खाकर सुराख बना देती है जिससे पत्तियां ढांचे के रुप में रह जाती है तथा कोई भी दाना नही बनता है।	फसल पर काबरिल 50डब्लू पी 1.5 कि.ग्रा./हे. की दर से छिड़काव करें।

माइनर कीट –

1	**फली बीटल**– इसकी इल्ली जड़ों में सुरंग बनाती है तथा वयस्क पत्तियो को खाते हैं जिससे पत्तियों मे अनगिनत सुराख हो जाते है तथा भारी	इसका नियंत्रण आरा मक्खी की तरह ही है।

	नुकसान हुई पत्तियां सूख जाती है और पौधे प्रारम्भिक अवस्था में सूख जाते हैं।	
2	**पर्ण सुरंगक कीट (लीफ माइनर)**– इसकी इल्ली पत्तियों पर सुरंग बनाकर खाते हैं जिससे भारी नुकसान होता है।	इसका नियंत्रण सरसों में मांहू की तरह ही है।
3	**बालदार सुण्डियां** – ये पत्तियों, नये तनों एवं हरी फलियों को खाते हैं।	सुण्डियों को एकत्र करके नष्ट कर दें क्वीनालफास 25 ई सी की 0.03 प्रतिशत की दर से छिड़काव करें या फालीडाल की 2 प्रतिशत की 20–25 किग्रा मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से बुरकाव करें।
4	**पेन्टेड बग**– बयस्क तथा निम्फ दोनों पत्तियों और फलियों का रस चूसते हैं जिससे पौधे मुरझा कर सूख जाते हैं।	0.05 प्रतिशत मैलाथियान 50 ई सी की एक लीटर दवा को 750 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

ख) रोग एवं उनका प्रबंधन –

क्रं.स.	रोग एवं उनके लक्षण	प्रबन्धक
1	**आल्टरनेरिया झुलसा**– भूरे रंग के गोलाकार धब्बे पौधे के सभी भागो पर बनते है जो बाद में काले रंग के हो जाते है और उनमे	1. बुवाई से पहले थीरम या कैप्टान 2.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से बीजोपचार करें। 2. रोग जनित फसल अवषेषों को नष्ट करें तथा मैंकोजेब
	गोलाकार छल्ले पत्तियों पर बनते हैं।	की 0.2 प्रतिशत का छिड़काव करें ।
2	सफेद रतुआ एवं डाउनी मिल्ड्यु– सफेद रतुआ के फफोले एवं डाउनी मे बृद्धि ज्यादातर पत्तियों की निचली सतह पर गंदी रूई जैसे उत्पन्न होते है। रोग के कारण अन्तः संक्रमण हो जाता हें जिससे पूरा पुष्पक्रम विकृत होकर बांझ हो जाते हैं।	मेटालैक्सिल+मैंकोजेब के मिश्रण को 2.5 ग्राम/किग्रा बीज की दर से बीजोपचार करें। रोग के प्रारम्भिक अवस्था में मेटालैक्सिल + मैंकोजेब के मिश्रण को 0.25 प्रतिशत की दर से छिड़काव करें। समय से बुवाई (अक्टूबर का प्रथम पखवारा) करने से रोग से बचाव हो सकता है। गोभी सरसों तथा सरसों की रोग प्रतिरोधी किस्मों का चयन करें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

कृषि विज्ञान केन्द्र, जम्मू

दूरभाषः 01923-252929

सरसों की उन्नत खेती

Compiled by :

Dr. Rakesh Sharma
Dr. Vikas Tandon
Dr. Punit Choudhary
Dr. Raju Gupta

कृषि विज्ञान केन्द्र, जम्मू

शेर-ऐ-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय-जम्मू

ई-मेलः **kvkjammu@gmail.com**
वेबसाइटः **www.kvkjammu.nic.in**

दूरभाषः 01923-252929